## "औरतों से बहुत ज़्यादा भलाइयाँ करो।"

# इतिहास और इस्लाम में औरत की हैसियत

**(पिछले शुमारे से आगे)**

## औरत का जीवन और मान

औरत के जीवन और मान के बारे में जाहिलियत वाले लोगों का विचार बहुत ही अजीब है। वे सच के तर्क और वहि के प्रकाश से अलग रहकर जीवन बिताते थे और औरत को ऐश की ज़िन्दगी का साधन समझते थे और उसे मर्द के लिए तरह–तरह के भोग लेने का माध्यम जानते थे।

पढ़ना लिखना उसके लिए निषेध था। रोज़ के कामों के लिए या सगे सम्बन्धियों के यहाँ भी जाने के लिए उसका घर से निकलना जायज़ नहीं था, उसे घर की चारदीवारी के अन्दर जीने की आज्ञा थी और उसे मर्दों के सामने बे अधिकार और मर्द को सारे अधिकार वाला समझते थे। ईसाईयों के इलाक़ों में ख़ुदाई क़ानून से 180° के (बिल्कुल उलटे) थे। वे कहते थे कि औरत को ऐसे बन्द कर दिया जैसे कुत्ते का मुँह बन्द किया जाता है। वे इसी दुविधा में थे कि औरत की रूह इन्सानी है या जानवरों वाली।

अफ्रीका में औरत को बिकाऊ माल समझा जाता था, उसकी हैसियत गाय, भैंस और भेड़ बकरी से ज़्यादा नहीं थी। जिसके पास जितनी औरतें होती थीं उसे उतना ही बड़ा समझा जाता था। औरत का मोल लेना देना आम था उससे बैल का काम लेने का भी आम चलन था। हर साल उनका बाज़ार लगता था जहाँ शादी के क़ाबिल (जवान कुंआरी) लड़कियों को बेचा जाता था।

भारत में पाँच साल की लड़की की शादी कर दी जाती थी, उनका कोई हक़ नहीं था। औरत का जीवन मर्द की देन समझा जाता था। जिसका पति मर जाता था तो पति के साथ उसे भी जीते जी चिता में जला दिया जाता। बेवा औरत को हर चीज़ से ज़्यादा नीचा तुच्छ समझा जाता था। आज भी अख़बार में ख़बरें होती हैं कि बहुत से हिन्दू दहेज़ न जुटाने के कारण बचपन में ही लड़की को ठिकाने लगा देते हैं।

चीन, तिब्बत में औरत चारदीवारी में ही काम कर सकती थी और बस। उसके चलने की ताक़त कम करने को बचपन से ही उसके पैदा होते ही उसके पैरों में लोहे की जूतियाँ पहना देते थे। 15 साल की होने पर इन जूतियों को उतारा जाता था।

ज्ञान दर्शन (Learning + Philosophy) केन्द्र यूनान (Greece) में लड़की पैदा करना जुर्म था। जिसके दो लड़कियाँ हो जाती थीं उसके ख़िलाफ कचहरी में मुक़द्दमा कर दिया जाता था, उस पर जुर्माना किया जाता था और अगर तीसरी बार लड़की होती थी तो उसे फाँसी देने का हुक्म हो जाता था।

अरब प्रायद्वीप (Peninsula) में जैसा कि कुर्आन मजीद में कहा गया है, आमतौर से लड़कियों को क़ब्र में ज़िन्दा गाड़ दिया जाता था।

"जब उनमें से किसी को लड़की होने की अच्छी ख़बर दी जाती थी तो बहुत दुख से उसका चेहरा काला पड़ जाता था और वह इस ख़बर को सुनकर, जो उसकी समझ में बहुत ही बुरी (ख़बर) थी अपने समाज से मुँह छिपाता फिरता था और यह सोचता था कि इस लड़की को ज़िल्लत और नीचपन में जीता रहने दे या उसे जीता ही ज़मीन में गाड़ दे, वे कितना बुरा फैसला करते थे।

ये मुद्दा उन जुल्मों का एक टुक्ड़ा है जो जाहिल मर्द औरतों पर किया करते थे। इन मुद्दों का विस्तार से बयान औरतों के बारे में लिखी गई किताबों में है। आप उन्हें पढ़ सकते हैं। कुछ पन्ने पहले औरत के बारे में ख़ुदा के क़ानून के दस मुद्दे लिखे हैं, उन पर भी आपने ग़ौर किया होगा। कुर्आन मजीद और रिवायतों में औरत को नीचे लिखी क़िस्मों की तरह कहा गया है:

'उम्म'– माँ, हर चीज़ का केन्द्र, असल सोता (क़िसस–7)

'हर्स'– जाति के बाक़ी रहने का कारण (बक़रा–223)

लिबास– ज़िन्दगी का पहनावा (बक़रा–187)

तसकीन– चैन आराम का कारण (रूम–21)

नेमत– भलाई, ख़ुदा की देन (वसाएलुश्शीआ– बाब औलाद)

रैहाना– पंखड़ी, नर्म

मर्दों और जवानों को जो शादी कर चुके हैं या शादी करना चाहते हैं उन्हें इस सुन्दर और फायदे देने वाली जीती चीज़ और उसकी रूहानी बातों पर ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। नबी, इमाम, अल्लाह वाले, ज्ञानी, जानने वाले, पढ़े–लिखे, दार्शनिक, समझदार, साधु, क़लमकार, धर्म के बड़े–बड़े जानने वाले, ख़ुदा के नेक बन्दे औरत से ही हुए हैं और यही आदमी की ज़िन्दगी में इन अच्छाइयों और भलाइयों का अस्ल सोता है।

माँ–बाप के लिए ज़रूरी है कि अपनी बेटियों में कमाल, ऊँचाई पैदा करने की ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करें और उनकी इन्सानी तरबियत करने में जी जान लगा कर जतन करें। उनके पतियों के लिये ज़रूरी है कि वे उनके हक़ का पास करें ताकि वे मैके और सुसराल के सभी हक़ का पास करते हुए नेक पौध (Generation) की तरबियत के लिए तैयार हो जायें और इससे मोमिन समाज को रूहानी ख़ूराक मिल जाए।

एक ईसाई धर्म की लड़की जंग में बन्दी होने के बाद इमाम अली नकी (अ0) की सेवा में आती है और इमाम व जनाब हकीमा ख़ातून (इमाम की बहन) के साये में पल पोस कर उनकी कोख दुनिया में न्याय फैलाने वाले बारहवें इमाम के जन्म के लिए तैयार हो जाती है।

औरत अपनी सकत से कमालों और सच्चाईयों का सोता है जो 'वहि' की हिदायत की रौशनी और ख़बर के उस्ताद (रसूल स0) के माध्यम से अपने काम पर चलकर, अपने काम पूरा कर हमेशा वाली निशानियों का केन्द्र हो जायगी।

औरत को नीच समझना उसके व्यक्तित्व पर हमला है, उसे बाँधना धर्म के क़ानूनों से बाहर है, उसे झिड़कना, मैके न जाने देना, उसके साथ नाक भवें चढ़ाकर जीवन बिताना, रोजाना के कामों में उसे उकताना, बाहर जाते समय उससे लड़ना–झगड़ना, उसकी चाह चाहतों को पूरा न करना, ख़ासकर सेक्स चाह को पूरा न करना, ये सारी अनचाही बातें धर्म की दृष्टि में घिनावनी और खुला हुआ जुल्म है।

अगर आप चाहते हैं जीवन का मकान प्यार मुहब्बत की नींव पर खड़ा हो तो औरत के वयक्तित्व का पास लिहाज़ कीजिये और उसको अपना प्यार बताइए, उसका दिल रखिये और घरेलू काम काम में उसका हाथ बटाइये, उसे पीड़ा न पहुँचाए, अगर घर के कुछ काम वह पूरा न कर सके तो उसकी अनदेखी करें ताकि जीवन की मिठास चख सकें। इस तरह ख़ुदा की इबादत भी हो जायेगी। वह मानवता की खेती है और इसकी भलाई का सोता है, आपके जीवन का पहनावा (साज) है, दुनिया का नर्म नाजुक फूल है, आपके पास ख़ुदा की नेमत है।

रसूल (स0) ने औरत को ऐसी ही प्यारी, चहीती ठहराया है जैसे ख़ुशबू और नमाज़ आपकी चहीती है।

''दुनिया की चीज़ों में औरत और ख़ुशबू मुझे प्यारी हैं और नमाज़ मेरी आँखों की ठण्डक है।''

अगर आदमी औरत के अधिकारों का पास लेहाज़ करे, उसके व्यक्तित्व का आदर करे और उससे नेक, भले बच्चे पैदा करे तो उसकी फायल (File) मरने के बाद भी बन्द न होगी और वह अपनी व औलाद के नेक व पाक कामों से फायदा उठाता रहेगा।

रसूल (स0) का कहना है:

'जब आदमी मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है लेकिन तीन चीज़ों से यह नहीं होता: बाक़ी रहने वाला (चलता रहने वाला) सदक़ा, जिसके ज्ञान से दूसरे फायदा उठाते हैं और उस नेक बेटे (बेटी) से जो उसके लिए दुआ करता है।

बस, माँ–बाप को अपनी बेटी का मान जानना चाहिए और मर्दों को अपनी भली बीवियों की क़द्र करना चाहिए क्योंकि बीवी और बेटी के बाप होने में इन्सान के लिए दुनिया व आख़िरत की भलाई है।